02

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

(तुलसीदास)

पद्यांशों का भावार्थ

1. नाथ .... भृगुकुलकेतू।।

दोहा

रे नृपबालक .... संसार।।

भावार्थ परशुराम के क्रोध को देखकर जब जनक के दरबार में सभी लोग भयभीत हो गए तो श्रीराम ने आगे बढ़कर कहा—हे नाथ! भगवान शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा। आप बताइए कि क्या आज्ञा है, आप मुझसे क्यों नहीं कहते? राम के वचन सुनकर क्रोधित परशुराम बोले—सेवक वह कहलाता है, जो सेवा का कार्य करता है। शत्रुता का काम करके तो लड़ाई ही मोल ली जाती है।

हे राम! मेरी बात सुनो, जिसने भगवान शिव के इस धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। वह इस समाज (सभा) को छोड़कर तुरंत अलग हो जाए, नहीं तो यहाँ उपस्थित सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम के इन क्रोधपूर्ण वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुराए और परशुराम का अपमान करते हुए बोले—हे गोसाईं! बचपन में हमने ऐसे छोटे-छोटे बहुत-से धनुष तोड़ डाले थे, किंतु आपने ऐसा क्रोध तो कभी नहीं किया। इसी धनुष पर आपकी इतनी ममता क्यों है?

लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातें सुनकर परशुराम क्रोधित स्वर में बोले— अरे राजा के पुत्र! मृत्यु के वश में होने से तुझे यह भी होश नहीं कि तू क्या बोल रहा है? तू सँभल कर नहीं बोल पा रहा है। समस्त विश्व में विख्यात भगवान शिव का यह धनुष क्या तुझे बचपन में तोड़े हुए धनुषों के समान ही दिखाई देता है?

2. लखन .... महीपकुमारा।।

दोहा

मातु .... अति घोर।।

भावार्थ लक्ष्मण जी हँसकर परशुराम से बोले—हे देव! सुनिए, मेरी समझ के अनुसार तो सभी धनुष एकसमान ही होते हैं।

लक्ष्मण श्रीराम की ओर देखकर बोले—इस धनुष के टूटने से क्या लाभ है तथा क्या हानि, यह बात मेरी समझ में नहीं आई है। श्रीराम ने तो इसे केवल छुआ था, लेकिन यह धनुष तो छूते ही टूट गया। फिर इसमें श्रीराम का क्या दोष है? मुनिवर! आप तो बिना किसी कारण के क्रोध कर रहे हैं?

लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम का क्रोध और बढ़ गया और वह अपने फरसे की ओर देखकर बोले—अरे दुष्ट! क्या तूने मेरे स्वभाव के विषय में नहीं सुना? मैं तुझे बालक समझकर नहीं मार रहा हूँ। अरे मूर्ख! क्या तू मुझे केवल मुनि समझता है? मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति हूँ।

मैं पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हूँ। मैंने अपनी इन्हीं भुजाओं के बल से पृथ्वी को कई बार राजाओं से रहित करके उसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया था। हे राजकुमार! मेरे इस फरसे को देख, जिससे मैंने सहस्रबाहु की भुजाओं को काट डाला था। अरे राजा के बालक लक्ष्मण! तू मुझसे भिड़कर अपने माता-पिता को चिंता में मत डाल। अपनी मौत न बुला। मेरा फरसा बहुत भयंकर है। यह गर्भों में पल रहे बच्चों का भी नाश कर डालता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. बिहसि .... कुठारा।।

दोहा

जो बिलोकि .... गंभीर।।

भावार्थ परशुराम के क्रोधित वचनों को सुनकर लक्ष्मण अत्यंत कोमल वाणी में हँसकर बोले—मुनिवर! आप तो अपने आप को बहुत बड़ा योद्धा समझते हैं और बार-बार मुझे फरसा दिखाते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं, परंतु मुनिवर! यहाँ पर कोई भी कुम्हड़े के छोटे फल के समान नहीं है, जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाए।

मुनि जी! मैंने आपके हाथ में फरसा और धनुष-बाण देखकर ही अभिमानपूर्वक आपसे कुछ कहा था। मैं आपको भृगुवंशी समझकर और आपके कंधे पर जनेऊ देखकर अपने क्रोध को सहन कर रहा हूँ।

हमारे कुल की यह परंपरा है कि हम देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय, इन सभी पर वीरता नहीं दिखाया करते, क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति होती है। इसलिए यदि आप मुझे मार भी दें तो भी मैं आपके पैर ही पड़ूँगा। हे महामुनि! आपका तो एक-एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। आपने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष धारण किया हुआ है।

यदि मैंने आपको देखकर कुछ गलत कह दिया हो, तो हे धैर्यवान महामुनि! मुझे क्षमा कर दीजिएगा। लक्ष्मण के यह व्यंग्य-वचन सुनकर भृगुवंशी परशुराम क्रोध में आकर गंभीर स्वर में बोलने लगे।

4. कौसिक .... सोभा।।

दोहा

सूर समर .... प्रतापु।।

भावार्थ परशुराम को लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर और क्रोध आ गया और वह विश्वामित्र से बोले—हे विश्वामित्र! यह बालक (लक्ष्मण) बहुत कुबुद्धि और दुष्ट है। यह काल (मृत्यु) के वश में आकर अपने कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंशी बालक चंद्रमा पर लगे हुए कलंक के समान है। मुझे यह पूरी तरह उद्दंड, मूर्ख और निडर लगता है। अभी यह क्षणभर में काल का ग्रास हो जाएगा अर्थात् मैं क्षणभर में इसे मार डालूँगा। मैं अभी से यह बात कह रहा हूँ, बाद में मुझे दोष मत दीजिएगा। यदि आप इसे बचाना चाहते हैं, तो इसे मेरे प्रताप, बल और क्रोध के विषय में बताकर अधिक बोलने से मना कर दीजिए।

लक्ष्मण इतने पर भी नहीं माने और परशुराम को क्रोध दिलाते हुए बोले—हे मुनिवर! आपका सुयश आपके रहते हुए दूसरा कौन वर्णन कर सकता है? आप तो अपने ही मुँह से अपनी करनी और अपने विषय में अनेक बार अनेक प्रकार से वर्णन कर चुके हैं। यदि इतना सब कुछ कहने के बाद भी आपको संतोष नहीं हुआ हो, तो कुछ और कह दीजिए। अपने क्रोध को रोककर असह्य दु:ख को सहन मत कीजिए। आप वीरता का व्रत धारण करने वाले, धैर्यवान और क्षोभरहित हैं, आपको गाली देना शोभा नहीं देता।

जो शूरवीर होते हैं, वे अपनी करनी युद्ध में दिखाते हैं, बातों से अपना वर्णन नहीं करते। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता है।

5. तुम्ह .... थोरे।।

दोहा

गाधिसूनु .... अबूझ।।

भावार्थ लक्ष्मण परशुराम से बोले—मुझे ऐसा लग रहा है मानो आप काल को हाँक (आवाज़) लगाकर बार-बार उसे मेरे लिए बुला रहे हैं। लक्ष्मण जी के ऐसे कठोर वचन सुनते ही परशुराम का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने अपने भयानक फरसे को घुमाकर अपने हाथ में ले लिया और बोले—अब लोग मुझे दोष न दें।

इतने कड़वे वचन बोलने वाला यह बालक मारे जाने योग्य है। बालक देखकर इसे मैंने बहुत बचाया, पर अब यह सचमुच मरने वाला है। परशुराम के क्रोध को देखकर विश्वामित्र उठ खड़े हुए और बोले— अपराध क्षमा कीजिए। बालकों के दोष और गुण को साधु लोग नहीं गिना करते। तब परशुराम ने कहा कि ये मेरा दुष्ट फरसा है, मैं स्वयं दयारहित और क्रोधी हूँ, उस पर यह गुरुद्रोही मेरे सामने उत्तर दिए जा रहा है।

हे विश्वामित्र! केवल आपके शील के कारण ही मैं इसे मारे बिना छोड़ रहा हूँ, नहीं तो इसे इस कठोर फरसे से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु के ऋण से मुक्त हो जाता।

परशुराम के वचन सुनकर विश्वामित्र ने अपने हृदय में हँसकर सोचा—मुनि परशुराम को हरा-ही-हरा सूझ रहा है अर्थात् चारों ओर विजयी होने के कारण ये राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। मुनि अब भी नहीं समझ रहे हैं कि ये दोनों बालक लोहे की बनी हुई तलवार हैं, गन्ने के रस की नहीं, जो मुँह में लेते ही गल जाएँ अर्थात् राम-लक्ष्मण सामान्य वीर न होकर बहुत पराक्रमी योद्धा हैं। मुनि परशुराम जी अज्ञानियों की तरह इनके प्रभाव को समझ नहीं पा रहे हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. कहेउ .... नेवारे।।

दोहा

लखन .... रघुकुलभानु।।

भावार्थ लक्ष्मण ने परशुराम से कहा—हे मुनि! आपके शील स्वभाव के बारे में कौन नहीं जानता? वह संपूर्ण संसार में प्रसिद्ध है। आप माता-पिता के ऋण से तो अच्छी तरह मुक्त हो गए। अब केवल गुरु का ऋण शेष रह गया है, जिसका आपके जी पर बड़ा बोझ है। शायद यह ऋण हमारे ही माथे पर था। बहुत दिन बीत गए, इस पर ब्याज़ भी बहुत चढ़ गया होगा। अब किसी हिसाब करने वाले को बुला लाइए तो मैं तुरंत ही थैली खोलकर सारी धनराशि दे देता हूँ। लक्ष्मण के कटु वचन सुनकर जब परशुराम ने अपना फरसा सँभाला तो सारी सभा हाय-हाय करके पुकारने लगी।

लक्ष्मण बोले—हे भृगुश्रेष्ठ! आप मुझे फरसा दिखा रहे हैं, पर हे राजाओं के शत्रु! मैं ब्राह्मण समझकर आपको बचा रहा हूँ। मुझे लगता है आपको कभी युद्ध के मैदान में वीर योद्धा नहीं मिले हैं।

हे ब्राह्मण देवता! आप घर में ही अपनी वीरता के कारण फूले-फूले फिर रहे हैं अर्थात् अत्यधिक खुश हो रहे हैं। लक्ष्मण के ऐसे वचन सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग 'यह अनुचित है, यह अनुचित है' कहकर पुकारने लगे। यह देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण को आँखों के इशारे से रोक दिया।

लक्ष्मण के उत्तर परशुराम की क्रोधाग्नि में आहुति के सदृश कार्य कर रहे थे। इस क्रोधाग्नि को बढ़ते देख रघुवंशी सूर्य राम, लक्ष्मण के वचनों के विपरीत, जल के समान शांत करने वाले वचनों का प्रयोग करते हुए परशुराम जी से लक्ष्मण को क्षमा करने की विनती करने लगे।

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. नाथ संभुधनु भंजनिहारा।
होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही।
सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई।
अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा।
सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा।
न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने।
बोले परसुधरहि अवमाने।
बहु धनुही तोरी लरिकाईं।
कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू।
सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।

(क) 'कोही' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) लक्ष्मण के लिए
(ii) रामजी के लिए
(iii) साधुओं के लिए
(iv) मुनि परशुराम के लिए

(ख) प्रस्तुत काव्यांश में 'गोसाईं किसे बोला गया है?
(i) परशुराम को (ii) रामजी को
(iii) लक्ष्मण को (iv) ये सभी

(ग) प्रस्तुत काव्यांश में श्रीराम ने स्वयं को किसका दास बताया है?
(i) हनुमान का (ii) शिव का
(iii) परशुराम का (iv) इनमें से कोई नहीं

(घ) परशुराम ने 'सेवक' किसे कहा है?
(i) सेवा धर्म का पालन करने वाले को
(ii) लड़ाई करने वाले को
(iii) धनुष तोड़ने वाले को
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) लक्ष्मण ने शिव धनुष की तुलना किससे की है?
(i) हाथ के बने धनुषों से
(ii) बचपन में खेलते हुए तोड़े गए धनुषों से
(iii) नकली धनुषों से
(iv) इनमें से कोई नहीं

2. लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बालकु बोलि बधौं नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

(क) 'सभी धनुष एक समान होते हैं' यह किसने कहा?
- (i) राम ने
- (ii) परशुराम ने
- (iii) लक्ष्मण ने
- (iv) मुनि विश्वामित्र

(ख) लक्ष्मण ने भगवान शिव का धनुष टूटने का क्या कारण बताया?
- (i) श्रीराम के छूने मात्र से यह टूट गया
- (ii) सामान्य धनुष था इसलिए टूट गया
- (iii) लकड़ी का धनुष था इसलिए टूट गया
- (iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) परशुराम ने क्रोधित होकर लक्ष्मण को अपने बारे में क्या बताया?
- (i) बाल ब्रह्मचारी हूँ
- (ii) अत्यंत क्रोधी स्वभाव का हूँ
- (iii) विश्व में क्षत्रिय कुल के शत्रु के रूप में विख्यात हूँ
- (iv) उपरोक्त सभी

(घ) परशुराम ने लक्ष्मण को क्या समझकर उनका वध न करने की बात कही?
- (i) बालक
- (ii) राजा
- (iii) क्षत्रिय
- (iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) परशुराम ने लक्ष्मण को क्या चेतावनी दी?
- (i) माता-पिता को चिंता में मत डाल
- (ii) बालकों के समान बने रहो
- (iii) वाद-विवाद मत कर
- (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

3. बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कुछु कहहु सहौं रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पर परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

(क) लक्ष्मण ने परशुराम को क्या कहा?
- (i) आप स्वयं को बड़ा योद्धा मानते हैं
- (ii) बार-बार मुझे फरसा दिखाते हैं
- (iii) आप फूँक से ही पहाड़ उड़ाना चाहते हैं
- (iv) उपरोक्त सभी

(ख) काव्यांश के आधार पर बताइए कि रघुकुल के व्यक्ति किस पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते?
- (i) देवता
- (ii) ब्राह्मण
- (iii) भगवान के भक्त
- (iv) ये सभी

(ग) 'भृगुसुत' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
- (i) लक्ष्मण के लिए
- (ii) मुनि विश्वामित्र के लिए
- (iii) परशुराम के लिए
- (iv) राजा जनक के लिए

(घ) काव्यांश में 'कुम्हड़बतिया' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
- (i) कमजोर व्यक्तियों के लिए
- (ii) शक्तिशाली व्यक्तियों के लिए
- (iii) 'i' और 'ii' दोनों
- (iv) विद्वान् व्यक्तियों के लिए

(ङ) काव्यांश के आधार पर बताइए कि कौन फूँक से ही विशाल पर्वत को उड़ा देना चाहता था?
- (i) लक्ष्मण
- (ii) परशुराम
- (iii) राम
- (iv) विश्वामित्र

4. कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु।
कुटिलु कालबस निज कुल घालकु।।
भानु, बंस राकेस कलंकू।
निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।।
काल, कवलु होइहि छन माहीं।
कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं।।
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा।।
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा।
तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी।
बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू।
जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा।
गारी देत न पावहु सोभा।।
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।।

(क) परशुराम ने किसे इंगित करके यह कहा कि यह बालक अपने कुल का घातक बन रहा है?
(i) श्रीराम को देखकर
(ii) जनक को देखकर
(iii) विश्वामित्र को देखकर
(iv) लक्ष्मण को देखकर

(ख) प्रस्तुत पद्यांश के रचनाकार कौन हैं?
(i) सूरदास (ii) जायसी
(iii) तुलसीदास (iv) कबीरदास

(ग) परशुराम ने विश्वामित्र के समक्ष लक्ष्मण को किसके समान बताया?
(i) चंद्रमा पर लगे कलंक के समान
(ii) तपस्वी योगी के समान
(iii) सरोवर के जल के समान
(iv) सूर्य के तेज के समान

(घ) लक्ष्मण के अनुसार शूरवीर अपनी करनी कहाँ दिखाते हैं?
(i) सभा में (ii) समाज में
(iii) युद्ध में (iv) ये सभी

(ङ) काव्यांश के अनुसार कायर किसे कहा गया है?
(i) जो शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करे
(ii) जो अपनी वीरता का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करे
(iii) (i) तथा (ii) दोनों
(iv) जो शत्रु से न डरे

5. कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा।।
माता पितहि उरिन भये नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें।।
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।
भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही।।
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे।।

(क) लक्ष्मण के अनुसार परशुराम पर कौन-सा ऋण शेष रह गया है?
(i) माता-पिता का ऋण (ii) गुरु ऋण
(iii) भातृत्व ऋण (iv) पुत्र ऋण

(ख) लक्ष्मण के किन शब्दों से परशुराम पुनः क्रोधित हो गए?
(i) हे नृपद्रोही! मैं ब्राह्मण समझकर आपको बचा रहा हूँ
(ii) हे ब्राह्मण देवता लगता है रणधीर वीरों से आपका सामना कभी नहीं हुआ
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) आप (परशुराम) ज्ञानी-महाज्ञानी नहीं है

(ग) काव्यांश के आधार पर बताइए कि सभा में हाय-हाय की पुकार होने का क्या कारण था?
(i) लक्ष्मण वध की संभावना
(ii) परशुराम वध की संभावना
(iii) सभा में युद्ध की संभावना
(iv) उपरोक्त सभी

(घ) काव्यांश के आधार पर बताइए कि किसकी बात सुनकर सभा में उपस्थित लोग 'यह अनुचित है' कहकर पुकारने लगे?
(i) परशुराम की
(ii) लक्ष्मण की
(iii) विश्वामित्र की
(iv) श्रीराम जी की

(ङ) 'लखन उत्तर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु' पंक्ति से आशय है
(i) लक्ष्मण के उत्तर परशुराम की क्रोधाग्नि में आहुति के समान कार्य कर रहे थे
(ii) श्रीराम के उत्तर परशुराम की क्रोधाग्नि में आहुति के समान कार्य कर रहे थे
(iii) परशुराम के वचन लक्ष्मण को क्रोधाग्नि में आहुति के समान लग रहे थे
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. परशुराम के क्रोध का मूल कारण था
(क) शिव-धनुष का टूटना
(ख) जनक द्वारा शिव-धनुष को सभा में रखना
(ग) श्रीराम द्वारा शिव-धनुष का अपमान करना
(घ) लक्ष्मण द्वारा व्यंग्य बाण चलाना

2. परशुराम सहस्रबाहु को अपना शत्रु क्यों मानते थे?
(क) सहस्रबाहु ने शिव-धनुष को भंग कर दिया था
(ख) सहस्रबाहु ने उनके पिता जमदग्नि से कामधेनु गाय का अपहरण कर लिया था
(ग) परशुराम सहस्रबाहु से उसके क्षत्रिय होने के कारण ईर्ष्या करते थे
(घ) सहस्रबाहु ने परशुराम की तपस्या भंग की थी

3. लक्ष्मण जी ने परशुराम को शिव-धनुष के बारे में क्या कहा?
(क) यह धनुष पुराना था, इसलिए टूट गया
(ख) इसे टूटे हुए धनुष को अपने साथ ले जाइए
(ग) ऐसे धनुष हमने बचपन में बहुत-से तोड डाले हैं
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

4. लक्ष्मण ने शिव-धनुष के टूटने के विषय में परशुराम को क्या सफाई पेश की?
(क) श्रीराम ने तो इसे केवल छुआ था, पर यह छूते ही टूट गया फिर इसमें श्रीराम का क्या दोष
(ख) पुराना होने के कारण यह धनुष जर्जर हो गया था, इसलिए टूट गया
(ग) धनुष अधिक भारी था, इसलिए प्रत्यंचा चढ़ाते हुए टूट गया
(घ) धनुष की डोरी छोटी होने के कारण प्रत्यंचा चढ़ाते हुए टूट गया

5. परशुराम ने लक्ष्मण को यह क्यों कहा कि क्या तू मुझे केवल मुनि समझता है?
(क) वे लक्ष्मण को तुच्छ बालक समझते थे, जो उनसे बराबरी नहीं कर सकते थे
(ख) उन्होंने पूर्व में कई बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर ब्राह्मणों को दान में दे दिया था, इसलिए उन्हें अपने बल का अभिमान था
(ग) परशुराम एक क्षत्रिय थे
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

6. परशुराम ने अपनी भुजाओं के बल से कौन-सा कार्य कर दिया था?
(क) देवताओं का कल्याण
(ख) धरती को क्षत्रियों से रहित
(ग) क्षत्रियों का पालन
(घ) असमर्थ व्यक्तियों की सहायता

7. परशुराम के लिए लक्ष्मण के शब्द किसके समान थे?
(क) शीतल जल के समान
(ख) जले पर नमक के समान
(ग) क्रोध रूपी अग्नि में घी के समान
(घ) समुद्र में उठती लहरों के समान

8. परशुराम जी अपने किस अस्त्र से लक्ष्मण को डरा रहे थे?
(क) धनुष से (ख) तलवार से
(ग) फरसे से (घ) भयंकर बाणों से

9. लक्ष्मण जी ने स्वयं को किसके समान नहीं बताया?
(क) कमजोर क्षत्रियों के समान
(ख) कुम्हड़े के छोटे फल के समान
(ग) वहाँ बैठे अन्य राजाओं के समान
(घ) परशुराम जी के समान

10. 'इहाँ कुम्हड़ बतिआ कोउ नाहीं' पंक्ति से क्या आशय है?
(क) यहाँ कोई भी मेरे जैसा क्षत्रिय नहीं है
(ख) यहाँ कोई कुम्हार के घड़े के समान नहीं है
(ग) यहाँ कोई भी कुम्हड़े के छोटे फल के समान नहीं है
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

11. लक्ष्मण जी परशुराम जी को क्या समझकर अपने क्रोध को सहन कर रहे थे?
(क) उन्हें भृगुवंशी व जनेऊधारी समझकर
(ख) उन्हें साधारण तपस्वी व मुनि समझकर
(ग) उन्हें एक कमजोर ब्राह्मण समझकर
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

12. लक्ष्मण ने अपने कुल की किस विशेषता का उल्लेख किया है?
(क) उनके कुल से संबंधित व्यक्ति निहत्थे पर वार नहीं करते
(ख) उनके कुल से संबंधित व्यक्ति देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय पर प्रहार नहीं करते
(ग) उनके कुल से संबंधित व्यक्ति ब्राह्मण, मुनि या तपस्वी से विवाद नहीं करते
(घ) उनके कुल से संबंधित व्यक्ति किसी ब्राह्मण, मुनि या तपस्वी का अपमान नहीं करते

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

13. परशुराम विश्वामित्र से लक्ष्मण की क्या शिकायत करते हैं?

(क) यह बालक अत्यंत मंदबुद्धि है और काल के वश में आकर अपने ही कुल का नाश करने वाला है

(ख) यह बालक अत्यंत वाक्पटु है। मुझे इसकी बातों ने बहुत प्रभावित किया है

(ग) यह बालक बहुत हठ कर रहा है। मैं इसे नष्ट कर दूँगा

(घ) यह बालक मेरा अपमान कर रहा है और तुम मौन होकर सुन रहे हो

14. लक्ष्मण परशुराम को शूरवीरों की किस विशेषता के बारे में बताते हैं?

(क) जो शूरवीर होते हैं, वे अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते

(ख) जो शूरवीर होते हैं, वे अपनी करनी युद्ध में दिखाते हैं, बातों से अपना वर्णन नहीं करते

(ग) जो शूरवीर होते हैं, वे आपकी (परशुराम की) तरह अपने बल का अभिमान नहीं करते

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

15. 'माता-पितहि उरिन भये नीकें' से क्या आशय है?

(क) आप माता-पिता के ऋण से तो मुक्त हो गए

(ख) आप पर माता-पिता का ऋण बाकी है

(ग) आपको माता-पिता के ऋण को नहीं भूलना चाहिए

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

16. लक्ष्मण ने परशुराम से ऋण चुकाने के लिए किसे बुलाने को कहा था?

(क) अपने गुरु को

(ख) राजा दशरथ को

(ग) हिसाब-किताब जानने वाले को

(घ) किसी बिचौलिए को

17. विश्वामित्र ने परशुराम के क्रोध को देखकर क्या कहा?

(क) बालकों के दोष और गुण को साधु लोग नहीं गिना करते

(ख) साधु लोगों को इतना क्रोध व अहंकार शोभा नहीं देता

(ग) आप मुनि और तपस्वी हैं। शिव-धनुष के टूटने से आपको क्या प्रयोजन?

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

18. परशुराम और लक्ष्मण संवाद में राम का मौन उनके स्वभाव की किस विशेषता को उजागर करता है?

(क) धीरता और गंभीरता

(ख) मर्यादा और विनयशीलता

(ग) बड़ों और गुरुजनों के प्रति अपार श्रद्धा व आदर

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

19. परशुराम के क्रोध की अग्नि को शांत करने में मुख्य भूमिका किसने निभाई?

(क) अयोध्या के राजा दशरथ ने

(ख) विश्वामित्र ने

(ग) स्वयं भगवान शिव ने

(घ) श्रीराम ने

20. 'जल सम बचन' पंक्ति के अनुसार जल के समान शीतल वचन किसके थे?

(क) राम (ख) परशुराम

(ग) विश्वामित्र (घ) लक्ष्मण

उत्तरमाला

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. क (iv), ख (i), ग (iii), घ (i) ङ (ii) *2.* क (iii), ख (i), ग (iv), घ (i) ङ (i) *3.* क (iv), ख (iv), ग (iii), घ (i) ङ (ii)

4. क (iv), ख (iii), ग (i), घ (iii) ङ (iii) *5.* क (ii), ख (iii), ग (i), घ (ii) ङ (i)

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क)	2. (ख)	3. (ग)	4. (क)	5. (ख)	6. (ख)	7. (ग)	8. (ग)	9. (ख)	10. (ग)
11. (क)	12. (ख)	13. (क)	14. (ख)	15. (क)	16. (ग)	17. (क)	18. (घ)	19. (घ)	20. (क)

व्याख्या सहित उत्तर

10. *(ग)* परशुराम के क्रोध से भरे वचन सुनकर लक्ष्मण जी उन्हें कहते हैं कि हे मुनिवर! यहाँ पर कोई भी कुम्हड़े के छोटे फल के समान नहीं है जो आपकी तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाए अर्थात् यहाँ कोई कमजोर व्यक्ति नहीं है जो आपकी धमकी से डर जाए।

15. *(क)* यहाँ लक्ष्मण जी परशुराम को कह रहे हैं कि आप माता-पिता के ऋण से तो अच्छी तरह मुक्त हो गए हैं और अब केवल गुरु-ऋण ही शेष रह गया है, जो आप पर बोझ बन रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in